प्रस्तावना :

घर परिवार समाज में अपनी दयनीय स्थिति से व्याकुल हो उभरा स्त्री प्रतिरोध आम जीवन तक ही सीमित नहीं रहा, सदियों से चली आ रही पितृसत्तात्मकता के खिलाफ लामबंद होने का ये उद्देश्य कतई नहीं था कि पुरूष जाति का विरोध हो अपितु विरोध इस बात का था कि स्त्री जो समाज को चलाने वाली दसरी सशक्त धुरी है, समाज में इसके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार क्यों? ये प्रश्न मात्र घर, परिवार, समाज में ही सीमित नहीं है अपितु लेखन जैसे अभिव्यक्ति के सबसे सशक्त माध्यम से मुखरित होने लगा है।

आधुनिक साहित्य की सबसे सशक्त और सक्षम विधा के रूप में जाने-जाने वाले उपन्यास को इसने अपना प्रमुख हथियार बनाया आज लेखन के क्षेत्र में महिलाएँ तेजी से आ रही है जो सुखद और सराहनीय है ये स्त्री लेखिकाएँ समाज में प्रचलित रूढिवादी दकियानूसी स्त्री विरोधी वर्जनाओं को तोड़ने का कार्य कर रही हैं।
"लिख क्या ललकार रही है, लाज आउटडेटेड शब्द हो गया है लजा नहीं, लजवा रहीं है" तमाम पारिवारिक सामाजिक, मानसिक बन्धन से मुक्ति की आकांक्षा लिये दिल, दिमाग, देह से स्त्री मुक्ति के बोल समूचे दिग्दिगंत में सुनायी दे रहे हैं।

लेखन के क्षेत्र में जितनी महिलाएँ आज सक्रिय हैं उतना कभी नहीं रही यहाँ तक कि उस कालखंड में भी नहीं जो भारतीय मेघा, मनीषा के लिये जाना जाता यानि वैदिक काल या फिर उस कालखंड में भी नहीं जो अर्थव्यवस्था की दृष्टि से भारत का स्वर्णकाल कहा जाता है। 90 के दशक के उदारीकरण, वैश्वीकरण के साथ महिला सशक्तीकरण का असर तमाम क्षेत्रों के साथ महिला लेखन के क्षेत्र में भी दिखा आखिर साहित्य समाज का दर्पण जो ठहरा।

महिलाओं के लेखन का मतलब है कि उनकी अभिव्यक्ति की आजादी, अस्मिता और सजग आत्मविश्वास को स्वर मिलना, यह सामाजिक परिवर्तन तथा गतिशीलता का संकेत है लेखन महिलाओं के आत्मसंघर्ष का सबसे सार्थक और उपयुक्त उपकरण है, सृजनशीलता का सीधा अर्थ है जागृति, स्त्री जब लिख रही होती है तो जिम्मेदारी उठा रही होती है क्योंकि अमूमन वह दृष्टा ही नहीं भोक्ता भी होती है इसलिए स्त्री की अनुभूति पीड़ा और संवेदनात्मक समझ दूसरों से ज्यादा तीव्र, सांद्र और सघन होती है। इसलिए आज अधिसंख्य स्त्रियों का लिखना सुखद और बेहतर सामाजिक भविष्य का संकेत है।

उपन्यासों के माध्यम से स्त्री प्रतिरोध की अभिव्यक्त करने में बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में हिन्दी महिला लेखिकाओं की सूची में एक अहम नाम जुडता है वह प्रभा खेतान का है, प्रभा खेतान के उपन्यास मुख्यतया अर्थ सेक्स और स्त्री प्रतिरोध की धुरी पर केन्द्रित है, वैश्विक धरातल पर बदलते हुये युगबोध के साथ स्त्री की समस्याओं को मुख्य विषय बनाते हुये अपने उपन्यासों का सृजन किया जिसमें छिन्नमस्ता अपने मिथकीय शीर्षक और विषयवस्तु के माध्यम से भारतीय रूढिगत समाज की सच्ची तस्वीर और उससे अपने प्रतिरोध को व्यक्त करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

प्राक्कल्पना :

हिन्दी उपन्यास हिन्दी भाषी जनता की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है जिसमें स्त्री उपन्यास लेखन महिला लेखिकाओं द्वारा स्त्रियों की वास्तविक स्थिति, निजी दंश, उनकी आशाओं और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बना।

इस लघु शोध प्रबंध में महिला उपन्यास लेखन में व्यक्त प्रतिरोध के विविध रूप को रेखांकित करेंगे और छिन्नमस्ता उपन्यास के माध्यम से उसमें व्यक्त विविध स्तर पर व्यक्त स्त्री प्रतिरोध को सामने लाने का कार्य किया जायेगा।

उद्देश्य :

प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध में हिन्दी महिला उपन्यास लेखन में व्यक्त प्रतिरोध को रेखांकित करना है तथा साथ-साथ छिन्नमस्ता में व्यक्त प्रतिरोध के विभिन्न आयामों को खोजने का प्रयास किया जायेगा, जिससे आगत भविष्य के विद्यार्थियों शोधार्थी लोगों के लिये यह सहायक बन सके यही इस शोध कार्य की सार्थकता एवं मेहता है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध एक अंतर अनुशासनिक विषय से आबद्ध है, एक ओर हिन्दी महिला उपन्यास लेखन है तो दूसरी ओर उसमें अभिव्यक्त स्त्री प्रतिरोध है जिससे इस विषय की निर्मिति एक व्यापक फलक पर होती है अतः वैज्ञानिक और आलोचनात्मक शोध प्रविधि के आलोक में महिला औपन्यासिक साहित्य और स्त्री प्रतिरोध का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा।

अध्याय योजना

हिन्दी महिला उपन्यास लेखन में स्त्री प्रतिरोध

विशेष संदर्भ – 'छिन्नमस्ता'

भूमिका

- **भूमिका**
- **अध्याय -1 हिंदी महिला उपन्यास का इतिहास**

1.1 हिंदी महिला उपन्यास विभिन्न काल

1.2 प्रमुख महिला उपन्यासकार एवं उपन्यास

अध्याय -2 हिंदी महिला उपन्यास में प्रतिरोध

2.1 स्त्री प्रतिरोध का स्वरूप

2.2 स्त्री मुक्ति आंदोलन और प्रतिरोध

2.3 कानूनी संरक्षण और स्त्री प्रतिरोध

2.4 विवाह, परिवार और स्त्री प्रतिरोध

2.5 शिक्षा और स्त्री प्रतिरोध

2.6 स्त्री लेखिकाओं के उपन्यास में स्त्री प्रतिरोध

अध्याय-3 प्रभा खेतान: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 व्यक्तित्व

3.2 रचनाएँ

3.3 हिंदी महिला लेखन में प्रभा खेतान का योगदान

अध्याय -4 छिन्नमस्ता उपन्यास में स्त्री प्रतिरोध

4.1 कथावस्तु

4.2 अंतर्दृष्टि

4.3 शिल्प-प्रविधि

4.4 चरित्र सृष्टि

4.5 कथासार

4.6 छिन्नमस्ता उपन्यास में स्त्री प्रतिरोध

- **उपसंहार**
- **संदर्भ ग्रंथ सूची**

संदर्भ ग्रंथ :

1. खेतान, प्रभा; 'छिन्नमस्ता', सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1991।
2. खेतान, प्रभा; 'आओ पेपे घर चलें', सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1990।
3. खेतान, प्रभा; 'तालाबंदी', सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1991।
4. खेतान, प्रभा; 'अपने-अपने चेहरे', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1995।
1. खेतान, प्रभा; 'अग्निसंभवा', हंस मासिक पत्रिका, मार्च, 1992 से मई 1992 तक प्रकाशित।
2. खेतान, प्रभा; 'पीली आंधी', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण।
3. खेतान, प्रभा; 'उपनिवेश में स्त्री', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 2003।
4. राय, गोपाल; 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007।
5. खेतान, प्रभा; 'ऐड्स' पूजा पत्रिकांक, कलकत्ता।
6. खेतान, प्रभा; 'बाजार के बीच बाजार के खिलाफ', वाणी प्रकाशन, 2004 भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न।
7. खेतान, प्रभा; 'सार्त्र आ अस्तित्वाद', सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984।
8. खेतान, प्रभा; 'शब्दों का मसीहा', सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985।

पत्र-पत्रिकाएँ :

1. हंस
2. इंडिया टुडे
3. नया ज्ञानोदय
4. सहारा समय
5. प्रभात खबर
6. अंतरंग संगिनी
7. मानुषी
8. आलोचना

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

एम.फिल. स्त्री अध्ययन उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

शोध शीर्षक

हिन्दी महिला उपन्यास लेखन में स्त्री प्रतिरोध

विशेष संदर्भ – 'छिन्नमस्ता'

2012-13

शोधार्थी

रोहित सिंह

स्त्री अध्ययन विभाग

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित)

मानस मन्दिर पोस्ट ऑफिस, पंचटीला, वर्धा–४४२००१ (महाराष्ट्र)